

1

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीरामविजय पंचदशध्यायप्रारंभः ॥



॥ श्रीमहागणाधिपतेयनमः ॥ भवाब्धिभरतापरमतुंबु ॥ द्वैतभावाचेतटागसवळ ॥ माजिकुबु
 ष्ठीचेकळ्ळोळ ॥ मोहोजळजसंभाव्या ॥ १ ॥ मदमछरथोरआवर्त ॥ कामक्रोधदिमासेअ
 हुत ॥ आशात्रषणाभ्रंतिसेथ ॥ मगरिथोरतळपति ॥ २ ॥ लेभदेषनक्रुथोर ॥ ममतेचा
 लाशअनिदुस्तर ॥ दंभअणिहेंअकार ॥ विसडेहनळपति ॥ ३ ॥ अविवेकडखिणितळ
 ता ॥ अविद्याभ्रंतिजळदेवता ॥ पीडितिभ्रुवनिचाजिवासमस्ता ॥ आशात्रषणाक
 ल्पना ॥ ४ ॥ अशिभगाधिभवनिधदियोर ॥ तथंरामकथाजाहाजसुंदर ॥ शिल्पिका
 रवान्मिकक्रुषेश्वर ॥ लांसतेषनिर्मित ॥ ५ ॥ नानाचरित्रेसुंदर ॥ याचिककाटथो
 रा ॥ विवेकेजोडुनिसमग्र ॥ अभदखेंसाधिले ॥ ६ ॥ साहित्यलोहोत्तगरबंध ॥ अनं १११॥
 तपदेखिळेविविध ॥ द्रष्टांतदोराप्रशिध्य ॥ गंईगंईआवळिले ॥ ७ ॥ अर्थरसेतेळनिखळ ॥

तेणें साधें बुजिले सकळ ॥ राम प्रताप स्तंभ विशाळ ॥ किर्तिशिडफडकत असे ॥ ८॥ ससकां
 डेस सखण ॥ लोटित भाव प्रभंजन ॥ निज बोध कर्णधार पुर्ण ॥ सकळ सुजाण देखणा ॥ ९ ॥
 ज्ञान वैराग्य भक्ति ॥ हचि आवले आवलिति ॥ या जाहा जा वीर वैसति ॥ अद्भुत ग्रंथि पु
 र्ण ज्ञाने ॥ १० ॥ राम नाम घोष थोर ॥ हेचियंत्राचे भडमार ॥ गुरु छुपेचे कणे अपार ॥ अगणि
 त पैभरले असे ॥ ११ ॥ तरि तुह्मि श्रोते सज्जन ॥ यचि जाहा जा वीर वैसोन ॥ भवाब्धि हा उ
 ले धुन ॥ जास वर पैठतिरा ॥ १२ ॥ चौदावे अध्याई कथन ॥ श्रुप नखेने वर्तमान ॥ निमाले
 त्रीशिरा खर दुषण ॥ दशकंठ शिब्र तंकेले ॥ १३ ॥ श्री राम प्रताप अद्भुत ॥ अकतांचिले क
 नाथ ॥ सद्गतांचि स्तुति अकोनि बहुत ॥ दुर्जन जैसे सोभति ॥ १४ ॥ पतिरलेचि अकेनि
 राहाति ॥ जारणि होत पै कष्टि ॥ किं मृगेंद्र गर्जना अकतांचो टिं ॥ वारण जैसे दचकवि ॥ १५ ॥

किंविष्णुमहिमाभैक तांनद्रुत॥ क्रोधावतिज्ञैसेदैत्य॥ असोतेवेळे मयजाकांत॥ मरिचिअ
 हाप्रवेशक॥ १६॥ मरिचिनेसन्मानदेउनि॥ रावणवैसविलाबासनि॥ याउपरिमथुर
 वचनि॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

त्याबाणवातेकरुन ॥ मिपडलेंपैसागरिं ॥ २३ ॥ विसकोटिमरिलेपिशिताशन ॥ तैसाचराप्रप्रता
 पनाठउन ॥ मरिचिपडलामुर्छायउन ॥ करिरावणसावधतया ॥ २४ ॥ मरिचिस्वणेरारवणा ॥ अ
 भिलाशितांपशंगना ॥ तुंमुकशिलआपुलियाप्राणा ॥ सत्यजाणनिर्धारं ॥ २५ ॥ सद्विवेक
 हृद्दईधरुन ॥ अनुचितकर्मोनघालिमन ॥ सदुसयोगतेवचुन ॥ अवशाहृद्दईधरावे ॥ २६ ॥ स
 र्वभुतियेकभगवंत ॥ हवेदशास्त्रीं प्रष्टवध ॥ कृष्णनिदोषनकरावासत्य ॥ साधिजेपरमा
 र्थभवस्य ॥ २७ ॥ क्षणिकजाणेनिशरिर ॥ साधावासारसारविचार ॥ मिभाग्यज्ञानेथोर ॥
 अहोअभिमाननधरावा ॥ २८ ॥ कामक्रोधमदमठर ॥ हेशत्रुजिंकावेअनिवार ॥ दशमुरुवानु
 जज्ञानथोर ॥ सर्वारथुविरकरिवेगिं ॥ २९ ॥ सखाकरिंतोचापपाणि ॥ मगसुखाशिनाहिव
 णि ॥ जोवरिशशिबाणितरणि ॥ तोवरिसुखेनादशि ॥ ३० ॥ रामकेवळपरमपुरुष ॥ आदि
 नारायणसर्वेश ॥ तुश्याउरावरिपडलेंधनुष्य ॥ शितासैवरिआठविलेकिं ॥ ३१ ॥ तुसेचा

(5)

॥३॥

॥त्या॥

लिलेजेकाप्राण॥मगउठिलारामपंचानन॥चंडिशकोदंडमंगुन॥जिवदानसुजिदिधले॥३३॥
सुजरामेवाचविले॥त्यांचेकायहंफळजाले॥जेणेउपकारबहुतकेले॥त्याशिमरिलेशस्त्रघड
नियां॥३४॥जेणेपाजिलासुधारस॥त्याशिघातलेमाहंविष॥जेणेरणिहुनिसोडिलेनिःशेष॥
॥त्याग्रहाअन्नलाविला॥२५॥जन्मपरिजेणेकेलेपाळण॥अपत्यकाळिरक्षिलेपुर्ण॥नानिद्रि
स्तअसलापाषाण॥कैसाकरिघातावा॥३५॥नैकाबुडनांकासेशिलाविले॥कांजळतेग्रहिहुनि
काडिले॥तेपितयातुन्मवेदक्षणे॥३६॥जैकशिरछेदिलांसोडविले॥३७॥यालागिंदशकंठानुं
सुबुध्द॥रामाशिनकरिविरोध॥रामकेवळब्रह्मानंद॥आनंदकंदजगद्गुरु॥३८॥सुसास्वामि
जाशकर॥तोहिरामभजनिसादर॥तेरामभायोसुंपामर॥हारनिआणुशक्तितोशि॥३९॥अेशि
मातुळाचिवचने॥सुधारसाहुनिगोडगहने॥किंविवेकसागरिचिरले॥रावणाहलितदिधलि॥॥३॥
॥४०॥परितोमंदकुळाळदेखे॥परिक्षानेणेमाहामुखे॥रोगिष्टापुढेअन्नसुरख॥४१॥

॥३॥

व्यर्थचिजैसंवाढिलें ॥४१॥ अवदानसमर्पिलें भस्मात् ॥ किं उक्तिरंजोवेतिलें अमृत ॥ किं मद्यपानिउ
 न्मत् ॥ त्याशीपरमार्थकासया ॥४२॥ असोपरमक्रोधायमान ॥ रावणबोलते कृतिक्ष्ण ॥ जैसें
 साधुचे छळण ॥ निंदक करिसाक्षेपें ॥४३॥ मझियाप्रतापापुढें ॥ राममनुष्यकायबापुडें ॥ करिन
 चुणदेहाचिंहाडें ॥ लुजेहेस्वतां समरंगण ॥४४॥ त्याचाप्रतापतुंवाणिशि ॥ तरितुजचिवधिन
 निश्चयेशि ॥ ह्मणेनिहातघातलाशस्त्राशि ॥ परिधिमानाशिविटला ॥४५॥ ह्मणे तुंअधमपरम
 दुर्जेन ॥ होयमागेनबोलवचन ॥ मिनातां मगवेशधरिन ॥ जातों शरणराघवेद्रा ॥४६॥ राम
 बाणेंहोतांमरण ॥ मिअक्षईसुखभोगिता ॥ तुझाहातेंकरुन ॥ अधःपतनपतिता ॥४७॥ आतां
 पंचवीरसचाललौकरि ॥ मगदोद्यैबैसानिरथावीर ॥ वायुवेगेंतेअवसरिं ॥ जनस्थानाशिपातले ॥४८॥
 वनिगुप्तउभारावण ॥ परिंचिनेमगवेशधरुन ॥ अंतरिंकरिन रामस्मरण ॥ ह्मणधन्यधन्यजा
 जिमि ॥४९॥ आलाचमकृतपंचवटि ॥ शिरामसपन्याहळिदिदिष्टि ॥ जालापरमसंतुष्टि ॥ अंतरि

5

॥४॥

कृष्णवृत्ति ॥५०॥ जैसे सुवर्णतगटसुरंग ॥ तैसे मृगाचे दिश आंग ॥ जैसे देखतां शितारंग ॥
 हातया लिखनुष्याते ॥५१॥ मगक्षणाक्षणापरतोन ॥ पाहे राघवाकडे विलोकुन ॥ तंवपदिशि
 बोलवचन ॥ पद्मजातजनकाप्रति ॥५२॥ ह्यणे जैसा मृगजिपर्यंत ॥ आसि देखिलाना
 हि यथार्थ ॥ याचे तचेचि कुंचुकि सत्य ॥ उतमहे इतके लिया ॥५३॥ अयोध्या प्रवेश करितो ॥
 ते कुंचुकि लेई नरधुनाथा ॥ शडमास उरत आसा ॥ मनु संवत्तरामाजिपै ॥५४॥ शितेचि ईछ
 सरितासाचार ॥ कर्मजवें तुंबळलापुर ॥ दुखसमुद्राप्रतिसाचार ॥ भेटवया जाउं पाहें ॥५५॥
 जाणोनि जाणकिं चे मानस ॥ आपि पुढिले जाणार मविष्य ॥ सत्वरचालिला अयोध्याधि
 श ॥ धनुष्याशिवाणला उनियां ॥५६॥ ह्यणे सोमित्रासावधान ॥ रक्षिं जान किंचि द्रव ॥
 परमकपटिपिशीताशन ॥ नसतें विघ्न करितिल ॥५७॥ असो गुंफे त शितारत्न ॥ दुरिंर
 क्षपाळ लक्षुमण ॥ जैसा माहाभुजंग अनुदिन ॥ निधान कुंभरसितसे ॥५८॥ पार्वति जवळि जैसा ॥

॥४॥

॥कुमर॥

5A

ईदिरं पाशिं स्वगेश्वर ॥ तैसा तो भुधर अवतार ॥ रक्षिदार गुंफे चें ॥ ५९ ॥ ईकडे मृगाचे पाठिला
 गें ॥ जातूरा घवला गेवें ॥ गौतमि तिराचा पुर्व मार्ग ॥ केले मृगे पलायन ॥ ६० ॥ मनाहुनि वेग
 जं त्यंत ॥ मन मोहन तरे जात ॥ श्वजवजरे खां पंडित ॥ पदे उमटत धरणि वरि ॥ ६१ ॥ पद्मो
 इव अणि भोगे द् ॥ निलत्रि व अणि व ज शर ॥ चरधार ज इच्छिति निरंतर ॥ दुर्लभ साचा
 रत यां शि ॥ ६२ ॥ मृगाचे वर्मांग लक्षुबा ॥ रामे साठिल दिव्य वाण ॥ भुमिवरि पडला हरिण ॥
 अचुक संधान रघुपति चें ॥ ६३ ॥ सादर पाहू रघुविर ॥ तो पडिले राक्षस शरि ॥ श्रीराम
 बाणे निशाचर ॥ पावला परत्र निर्धारें ॥ ६४ ॥ आश्चर्य करि बयो ध्याधि श ॥ हृणें हे परम क
 पटिराक्षस ॥ असो अश्चथ्या खाते पुराण पुतष ॥ श्रमे नियां बैसला ॥ ६५ ॥ ईकडे काय जा
 ले वर्तमान ॥ वनि गुप्त उमारा वण ॥ गुंफे दारिं लक्षुमण ॥ बैसला रक्षण अव्यग्र ॥ ६६ ॥ शो
 लिज वळि परमार्थ ॥ किंत पाशिर रक्षि श्रुचि व ॥ तैदरि सुमित्रा सुत ॥ मंगल क नाथ काय करि ॥ ६७ ॥

सा
॥ ६७ ॥

6

॥५५॥

श्रीरामासारिखि शब्दध्वनि ॥ राक्षसमुठवितकानि ॥ सौमित्राद्यां वधां वध्रणानि ॥ शिला
कर्षिणा कर्षित ॥ ६८ ॥ सौमित्रापावले करि ॥ वनिवैष्टिलं रजनिवैरि ॥ संकटपडले मजवैरि ॥
तुंकै नारि पाठिरारवा ॥ ६९ ॥ रणभूमि शिबधुनिषा ॥ उडघातिल सांगकोण ॥ राक्षशिघेतला
मासाप्राण ॥ मगयउनिकाय पाहेशि ॥ ७० ॥ जैसे जेक तां जेन कर्णदिनि ॥ परमघावीरि लि
अलः करणि ॥ ह्मणे श्रीरामसापडले वनि ॥ कसणा वाणिवाहति लुह्या ॥ ७१ ॥ रणिबंधुसंक
टिमित्र ॥ वृध्यापकाळिवोळखि जेक कुत्र ॥ विशमकाळिससुत्र ॥ साभाळितपितयाति ॥ ७२ ॥
किंशस्त्रमारहोतां अत्यंत ॥ करिचे वाडणपुढहोत ॥ किंसंसारतापें जेसंतस ॥ तेसाधुसं
गनिवताति ॥ ७३ ॥ मगबोले लक्ष्मण ॥ जानकिहंकापत्यवचन ॥ संकटिपडलरधुनंद
ना ॥ हंकाळंतिहिघेडना ॥ ७४ ॥ तोदेवाधिदेवसर्वात्म ॥ चराचरविजसफळद्रुम ॥ त्या
शि संकटपडलदुर्गम ॥ हंकाळंतिघेडना ॥ ७५ ॥ जरितमेशांकेलचंडांश ॥ जरिशितजरवाधिल

॥५५॥
अग्निस ॥

(6A)

जगमक्षककाकास॥भुलबाधाजरिहोये॥७६॥उर्णनभितंतुसहज॥जस्विधिजेमाहागजा॥
 तरिसंकटिपडलमाहाराजा॥जनकतनयजाणया॥७७॥असंबोलतांलक्ष्मण॥शिताजालि
 क्रोधायमान॥लिखणशब्दशस्त्रंकरन॥लक्ष्मणताडिला॥७८॥हणतुमचेंकळलेबंधुप
 ण॥वोळस्विलिम्पापनिचिरवुण॥माशाअभिलाशधरनिपुर्ण॥काननाप्रतिजाकाशि॥७९॥
 रामराक्षसिवधिल्यावनि॥मजकरंइडिबेशिपनि॥जैसामेंदृश्यमाधरनि॥शेवाकरि
 साक्षेपें॥८०॥सन्मुखदेखेनिरघुनाथा॥हणपडिजानकिजगंन्माता॥किंवनिरामवधावयात
 खता॥कैकैनेधाडिलास॥८१॥तुंदायादपरमदुर्जेन॥सापलबंधुकुपटिपुर्ण॥जकोतुसंकाळ
 वदन॥कळलेज्ञानवैराग्यतुजे॥८२॥रघुपतिशिषिपरितहोतां॥प्राणहास्यजिनंतता॥नि
 दयपाहातांतुजपरता॥भुवनत्रैदिसेना॥८३॥माशाअभिलाषूधरन॥रामाईछितोशिम
 रण॥असैजानकिवेवाग्वाण॥सैमित्रावरिसोडिले॥८४॥किंतसशस्त्रांचेघायपुर्ण॥त्याहु

॥त॥

(४)

॥६५॥

निबोलेतेतिक्ष्ण ॥ किंपर्वताचेकडेजाण ॥ आंगावरिकोसकले ॥ ८५ ॥ ह्रणेमातेजनकनंदिनि ॥
मिनिःकपटबोलिलेवाणि ॥ किंविजयसदाचापपाणि ॥ दुरववित्याशिकेचें ॥ ८६ ॥ पृथ्वि
आपवायुआकाश ॥ तुजमजसाक्षचंडांश ॥ मिबोलिलेनिर्दोष ॥ जैसेकांयशसोज्वळ ॥ ८७ ॥
मिबाळतुंजननि ॥ ह्रस्विभावमासेमनि ॥ तुझिलुजफळेकरणि ॥ पडशिलकंदनिषण्मास ॥
॥ ८८ ॥ पुढांमेटेजोरधुनाथ ॥ भोगिशितुं परमअनर्थ ॥ जैसेबोलेनिसुमित्रासुत ॥ चालिला
त्वरितवनाशि ॥ ८९ ॥ मगतोउन्मिकाप्राणवथा ॥ जनकाचाकनिष्ठजामात ॥ गुंफेदारिरेखावेदि
ला ॥ धनुष्यानेंतेधवां ॥ ९० ॥ ह्रणेतुंयाररेखाहुरजाशि ॥ तरिपरमअनर्थपावशि ॥ जोरधुवि
रअयोध्यावाशि ॥ त्याचिचआणतुजअसे ॥ ९१ ॥ शोधितघोरआरण्य ॥ सौमित्रजातकरि
त्सदन ॥ ह्रणेहोतांचिरामदर्शन ॥ प्राणत्यगिनसर्वथा ॥ ९२ ॥ श्रीरामपदांकितमुद्रादिस
ता ॥ ध्वजवज्रादिचिह्नेंमंडित ॥ मार्गकाठितसुमित्रासुत ॥ अकाद्रंशंतयेथेंकैसा ॥ ९३ ॥ ६५

॥६५॥

जैशाश्रुतिचानाधारेनिश्चित ॥ सस्वसपीप्रवेशतिसंत ॥ त्याचपरिसुमित्रासुत ॥ श्रीरघुनाथपा
 हुंजाये ॥ ९४ ॥ किंसंसारतापसंतसपुण ॥ तोसद्गुरुशिजायशरण ॥ बोजश्वथ्यास्वले जन्मो
 हन ॥ सामकिं तशिलजाकृविलक्षुन ॥ जातधावोनिखरेने ॥ ९५ ॥ तैसासत्वरजातलक्षुमण ॥
 तोजश्वथ्यास्वले जन्मोहन ॥ शामसुंदरदोदृष्यमान ॥ मखपाठणवैसलासे ॥ ९६ ॥ कोमाई
 लंश्रीरामवदन ॥ तोये तांदेरिविलालक्षुमण ॥ गोकुदिसेमुखम्लान ॥ लोटागणघातले ॥
 ॥ ९७ ॥ कठजालासद्गदित ॥ नयनिजालबश्रुमान ॥ श्रीरामचरणक्षकित ॥ पाहेतटस्तरधुवि
 र ॥ ९८ ॥ श्रीरामहृणेलक्षुमण ॥ कोशितेशियकुनजालावना ॥ येरुहणेरधुनंदना ॥ माझा
 वधकरिवेगि ॥ ९९ ॥ जैसेवाटमाझेमनि ॥ देहसमर्पावारामचरण ॥ रामेहृदईधरितातेक्षणि ॥
 कायसामनिस्वदसांग ॥ १०० ॥ सैमित्रसद्गदितहोउनिबोले ॥ शिलेनेवाग्बाणसोडिले ॥ तेष
 सर्वांगमाझेस्वोचले ॥ तंबोलिलेनवजाये ॥ १०१ ॥ मगबहुतप्रकारंसमाधाना ॥ सैमित्राचेक

६

॥७॥

रिशितारमण॥ तैसेचपरतलेदोघेजण॥ आश्रमपंथतसुनियां॥२॥ ईकेडेकथनेकैसें जालें॥ मागे
दशग्रिंवेकायकेले॥ रूपबलितचेंधरिलें॥ कापस्यकरुनितेधवां॥३॥ जानकिचंद्रमंडकसुंदर॥
तेथेराहुआलादशकंदर॥ उभारहिलारेखेबाहेर॥ दुराचारपापात्मा॥४॥ कांहरिणंदेखोनि
सकुमार॥ व्यावयासेपावेजेविव्याघ्र॥ तैसासाक्षसरेखेबाहेर॥ जवितवेशउभाबसे॥५॥
रावणपरमभयाभित॥ रेखानुलंघवेयथार्थ॥ जैसावडवानकबडुत॥ शलभकैसाबोला
डि॥६॥ पुढेउभादशमुख॥ परिजानकिविर्मथनि शंक॥ महेशापुढेमश्यक॥ तैसादश
कंदरउभाबसे॥७॥ ईद्रापुढेजैसारंक॥ किंजानियापुढेमाहामुख॥ किंकेशरिपुढेजंबु
क॥ सुर्यापुढेरवद्योतपें॥८॥ किंजनिपुढेपत्ता॥ किंखगेद्रापुढेउरग॥ किंराजहोसासमो
रकाग॥ तैसाखळउभातेथें॥९॥ किंनामापुढेपापदेख॥ किंवेदांतापुढेबाबाक॥ किंशं
करापुढेमश्यक॥ मिनकेतनेजेविंदिसे॥१०॥ किंपंडितापुढेअजापाळक॥ किंश्रेतियापुढेहिंसक॥

॥७॥

8A

किं वासुगिपुढं मुशक ॥ लक्षणे पाहुं पातला ॥ ११ ॥ किं अग्निपुढं डै संरण ॥ किं ज्ञानापुढं बज्ञान ॥
 किं माहावातापुढं जाण ॥ जळद जाळ वितळे ॥ १२ ॥ तै सशित्तपुढं रावण ॥ न्याहा कुनि पोहति च वदन ॥
 मनिह्रणे डै संनिधान ॥ त्रिभुवना मा जि नदिसे ॥ १३ ॥ जगन्माता आदि शक्ति ॥
 तिचा अमिता धारितां चिति ॥ अवदशा बालिरावणा प्रति ॥ श्रेष्ठि हातिं घेतति ॥ १४ ॥
 का प्रधेनु अमिता शितां जाण ॥ क्षयपात्र का सहस्रां ॥ जुन ॥ जाळंधर पार्वतिला गुन ॥
 अमिता शितां भस्म जाता ॥ १५ ॥ रणाचे वल्लि मा जि देखा ॥ कैशि उगिरा हिलदिपिका ॥
 तैसे वाटे दशमुरवा ॥ सस्यै ई कदां न करवा ॥ १६ ॥ कर्पूराचा पुतळा ॥ केवि गिळि प्रळय
 ज्वाळा ॥ तै शिन स्यई वे जनक बाळा ॥ रावणाचे निसर्वथा ॥ १७ ॥ शिते प्रतिपुसे रावण ॥
 येवनि तुं कोणा चिकोणा ॥ कां वसविळें घोर विपिन ॥ काय कारण तुं येथें ॥ १८ ॥ मग ज
 गन्माता बोले वचन ॥ अयोध्या प्रभुरधुनं दन ॥ मित्यचिल्लना पुर्ण ॥ कैन्या जाण जनक चि ॥ १९ ॥

१

॥८॥

वेंडिशकोदंडदारण ॥ रामेभंगिलें नलगताक्षण ॥ जोरावणबळदर्पहारण ॥ मखरक्षयता
टिकालक ॥ २० ॥ पाळवयापित्रुवचन ॥ वनाशिआलारघुनंदन ॥ सुर्पनखेशिविटंबुन ॥ श्री
शिरास्वरदुषणमारिले ॥ २१ ॥ आतांरावणअपिकुंभकर्ण ॥ यादोचांदुष्टंशिवधुन ॥ बंदित्चे
दंडारकसोडउन ॥ अयोध्येमगजां ॥ २२ ॥ वनागिलेरामलक्षुमण ॥ तेआतांयतिलनलग
ताक्षण ॥ तोवरिवैसावंबापण ॥ स्वस्तमनकरनिया ॥ २३ ॥ भयामितलंकनाथ ॥ प्रवेश
नकरवेगुंफेआत ॥ शिताबाहेरनयेसया ॥ आपरेखाउलंघुनी ॥ २४ ॥ मगस्वहस्तेकरन ॥ यां
सुखाशिपुजितिलरघुनंदन ॥ नावेकवैसाहयोनि ॥ रणासनघातले ॥ २५ ॥ अलितप्र
णहंराक्षसवन ॥ तुंयेकलियेथेकामिना ॥ बहुतेकआहेशिराक्ष ॥ शिण ॥ आंतनेउनि
गिळिशिमज ॥ २६ ॥ लांआसनघातलेगुंफेत ॥ तरिमिआंतनयेथथार्थ ॥ मजतुंस्वाशि ॥ ८॥
लनिश्चित ॥ कळलंमतसर्वसुखें ॥ २७ ॥ मगशिलाह्मणेहरहर ॥ आहिराक्षसनकेंसाचार ॥

असो जलितान् चक्रिंकर ॥ सत्यनिर्धारजाणपं ॥ २८ ॥ रावणविचारिबं तरिं ॥ हेनयेचिगुंफबा
 हेरि ॥ मुर्छनायउनिउविंवरि ॥ लटिकाचिपडियेला ॥ २९ ॥ ह्रणेजांतांफळजाहारेविण ॥ मा
 शाजातोयेथेप्राण ॥ गुंफेबाहेरयेउन ॥ बदेनिमाश्याफळघालि ॥ ३० ॥ तोंगुसरपेदेवसमस्त ॥
 जगन्मातेचेंस्ववनकरिता ॥ तुवांलंकेशिजात्रिनिवरिता ॥ बंध्यमुक्तकरिंजाह्राशि ॥ ३१ ॥
 तुजस्पर्शतं विरावण ॥ मस्महोईल नलयताश्या ॥ मगजाह्राशिवदिहुन ॥ सर्वथाकेषि
 नसेदि ॥ ३२ ॥ तुसेंकरनियानिमित्या ॥ लंकेशायईलरघुनाथा ॥ तरिमुख्यरुपजन्मिता ॥ क
 रिगुसजा ननिये ॥ ३३ ॥ तुसेंप्रतिविंबस्वरुपजाण ॥ स्वयेनटेळहुताशन ॥ रावणवोंशम
 स्मकरन ॥ कार्यशिध्दीकरिलतो ॥ ३४ ॥ तरिमुख्यरुपगुसकावे ॥ छायारुपतेथेजावे ॥ जैसेदे
 वविनवितिजाघवे ॥ अवशाह्रणेजानकि ॥ ३५ ॥ असेईकेडेरावण ॥ ह्रणेथांघथां वजातोप्राण ॥
 मैंजगन्माताफळघेउन ॥ रेखेजवळिपातलि ॥ ३६ ॥ भिक्षाघालावयाकर ॥ शिलेनेकेळारे

10

॥९॥

स्वेबाहेर ॥ तैशिवबोढुनिसत्वर ॥ निशाचरं उचलिलि ॥ ३७ ॥ आपुलेंरपलंकेश ॥ दविलाजा
लाजानकिस ॥ क्षणेम्याबेदिघातलं त्रिदश ॥ वरिनिश्चितमजजाता ॥ ३८ ॥ शितेलागिंजा
किंगन ॥ जैसेमनिभाविशवण ॥ शितवेदजशिभस्महोउव ॥ नलगतांनानाचि ॥ ३९ ॥ अ
ग्निशिवाळबाकेविकागे ॥ पतंगनुरेदिससंगे ॥ तुशाभुत्यजवळिवेगे ॥ आलाजाणराक्षसा
॥ ४० ॥ रामपंचाननाचिवस्तुजाष्ण ॥ पुर्ण ॥ जंबुकांतुनेतोशित्चेरन ॥ जैसेअन्नसदनि
निघेश्वान ॥ तैसाजाणदशमुरवातु ॥ ४१ ॥ स्वहेरांगारदृष्टिक ॥ पुढेहाणोजातांदेख ॥
तैसातुंभस्महोशिनिःशंक ॥ सेडिमजराक्षसा ॥ ४२ ॥ परिनसोडिचरावण ॥ घातलिर
थावीरनेउव ॥ गुंफेभोवतेहोतेजेब्राह्मण ॥ तेभयेकरनिपळाले ॥ ४३ ॥ ग्रहस्ताशिपडलां
विषमकाळ ॥ अश्रितपळतिजेविंसकळ ॥ तैंब्राह्मणरानेमाळ ॥ भयेकरनिपळताति ॥
॥ ४४ ॥ शिताजालिदिनवदन ॥ क्षणेकोठेरामलक्षुमण ॥ करुणास्वरंहाकफोउन ॥ आंवाकरिराधव

॥९॥

चा ॥ ४५ ॥

लो निराळमार्गे रथ ॥ पतित जायलं कनाथ ॥ दिर्घस्वरे आक्रं दत ॥ जनक दुहिते कळि ॥ ४६ ॥
 नाना रक्षि वनचरां प्रति ॥ हाक फोडुनि शितासति ॥ ह्यणे सखरसांगरधुपति ॥ राक्षसने तो म
 जलंगि ॥ ४७ ॥ शितेचि करुणा जैके नि ॥ मसुपक्षि श्वति नयनि ॥ रक्षिं बाणि पाषाणि ॥ दुस्व
 करे नि उलिजे ॥ ४८ ॥ शिता ह्यणे श्रीरामा ॥ अपर्णा वरमन विश्रामा ॥ पद्मजात जनकापरब्रम्हा ॥
 धावे आतां लोकरि ॥ ४९ ॥ हेतटिकां लकारधुनिरा ॥ हेमस्वपाळकासमरीधिरा ॥ अहिब्यो ध्या
 रूकापरमउदारा ॥ धावे त्वरे येवेळ ॥ ५० ॥ रावण हासुपदासण ॥ जिह्गुरिं सोबला जालो प्रा
 ण ॥ तुंसुपर्णा वरिगारुडिपुर्ण ॥ झडघालु निपाव वेगि ॥ ५१ ॥ रावणने कृहा केवळ मलांग ॥ पंच
 नना तुं धां वसवेग ॥ वियोगानेळं जळिले संवोग ॥ करुणा घनवर्षवेगि ॥ ५२ ॥ परमसाधुसु
 मित्रासुता ॥ पवित्र जैसाकेवळ आदित्य ॥ त्याशिळुळि लारधुनाथ ॥ मज्जं तरला आतां चि ॥ ५३ ॥
 जोकरिसाधु छळण ॥ नसते ठेवित्या वरि दुषण ॥ तरि जन्मो जन्मि वौं शरं वडण ॥ कर्मदासण

11

119011

भोगिठतो ॥५४॥ साधुछळकदुराचरि ॥ त्याचागारेकांपेधरत्रि ॥ ईश्वरसर्वदोषक्षमाकरि ॥ तरि
भवसागरिपतितशि ॥५५॥ तरिपतितजोकांसंतछळक ॥ त्याशिदुस्वभोगविअनेक ॥ त्यादुष्ट
चेनपाहावेमुरव ॥ पापिनिशंकसाधुत्रोहि ॥५६॥ हरिद्रदुरेवेबहुत ॥ त्यावस्विकेसळतिसम
स्त ॥ सध्यामजनिअलिप्रचित ॥ नेनोरघुनाथाधरनियां ॥५७॥ जानकिचाविलापजेका
न ॥ चराचरक्षितिवकरितिरत्न ॥ जटायुधांवलखेरंकरन ॥ क्षोभलाकाळपुर्णजेसा ॥५८॥
कायाथोरगिरिसमान ॥ वज्रचंचुपरमतिक्षण ॥ तिस्वटनरेवेविद्रुमवर्ण ॥ रावणावरिके
सळला ॥५९॥ जटायुह्मणरेदुर्जना ॥ माहनष्टानस्वामळिणा ॥ सोडिवेगिं श्रीरामललना ॥
नाहिलरिप्राणामुकशिल ॥६०॥ दिपाचेपरिहोयकाजळ ॥ तैसाब्रह्मवैशिंशुचांडाळ ॥ बु
झेछेदिनशिरःकमळ ॥ सोडिवेळाळजानकि ॥६१॥ कासयाकेलेवेदाध्ययन ॥ कायकोर
डेब्रह्मज्ञान ॥ जळेतुझेतपाचरण ॥ शिवमजनव्यर्थगेलें ॥६२॥ जोजगद्वयजगदोध्यार ॥

119011



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com